सिद्धान्त की हस्तपुस्तिका

यह पुस्तिका कुछ ऐसे सिद्धांतों के लिए बाइबल आधारित समर्थन प्रदान करती है जिन्हें अकसर झूठे विश्वासों द्वारा नकार दिया जाता है। यह पुस्तिका सभी मसीही सिद्धांतों को शामिल करने के लिए नहीं बनाई गई है, यहाँ पर सभी महत्वपूर्ण सिद्धांतों को शामिल नहीं किया गया है।

(1) बाइबल धर्मसिद्धान्त के लिए पर्याप्त है।

यह क्यों मायने रखता है

कुछ विश्वास जो मसीही होने का दावा करते हैं, वे अपने सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों के लिए नए प्रकाशन पर निर्भर करते हैं। उनका दावा है कि बाइबल में वह सब कुछ नहीं है जो सिद्धांत के लिए ज़रूरी है। लेकिन बाइबल दावा करती है कि इसका संदेश पर्याप्त है, इसलिए यदि कोई व्यक्ति इसका पूरी तरह से पालन करता है, तो वह बच जाता है।

वचन आधारित प्रमाण

“आकाश और पृथ्वी का टल जाना व्यवस्था के एक बिन्दु के मिट जाने से सहज है” (लूका 16:17)। कुछ इब्रानी अक्षरों के ऊपर लिखे इस चिह्न का कोई अर्थ नहीं था और यह केवल सजावट के लिए था। इस पद का अर्थ यह है कि परमेश्वर का वचन सुरक्षित रखा गया है।

“क्योंकि तुम ने नया जन्म पाया है...परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है। घास सूख जाती है, और फूल झड़ जाता है, परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहता है। और यही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था” (1 पतरस 1:23-25)। परमेश्वर का वचन कभी असफल नहीं होगा, और यह सुसमाचार यह बात बताता है। इसलिए, सुसमाचार उन सिद्धांतों में नहीं पाया जाएगा जो वचन से बाहर हैं, या इसके विपरीत हैं।

“आकाश और पृथ्वी टल जाएँगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी” (मरकुस 13:31)। यीशु ने कहा कि उनके शब्द व्यर्थ नहीं जायेंगे।

“बचपन से पवित्रशास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है” (2 तीमुथियुस 3:15)।

“सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है...ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने” (2 तीमुथियुस 3:16-17)। बाइबल में इतनी शिक्षा है कि वह किसी व्यक्ति को वैसा बना सकती है जैसा परमेश्वर उसे बनाना चाहता है।

(2) केवल एक ही परमेश्वर हैं।

यह क्यों मायने रखता है

सृष्टिकर्ता और पिता के रूप में, परमेश्वर महिमा के योग्य हैं। वह चाहते हैं कि हम उनके प्रति ऐसी विश्वासयोग्यता रखें जो किसी अन्य प्राणी को न मिले। वह कहते हैं कि वह जलन रखने वाले परमेश्वर हैं (निर्गमन 34:14, व्यवस्थाविवरण 4:24, व्यवस्थाविवरण 5:9, व्यवस्थाविवरण 6:15)। जब वह महिमा किसी और को दी जाती है जिसके केवल वे योग्य हैं, तो वह क्रोधित हो जाते हैं (व्यवस्थाविवरण 32:16, 21)। जब कोई विश्वास यह सिखाता है कि एक से अधिक परमेश्वर हैं, या मनुष्य परमेश्वर बन सकता है, तो इसका परिणाम यह होता है कि परमेश्वर से वह महिमा ले ली जाती है जो केवल उन्हीं की है।

वचन आधारित प्रमाण

“मुझ से पहले कोई परमेश्वर न हुआ और न मेरे बाद कोई होगा” (यशायाह 43:10)।

“मैं सबसे पहला हूँ, और मैं ही अन्त तक रहूँगा; मुझे छोड़ कोई परमेश्वर है ही नहीं” (यशायाह 44:6)।

“क्या मुझे छोड़ कोई और परमेश्वर है? नहीं, मुझे छोड़ कोई चट्टान नहीं; मैं किसी और को नहीं जानता” (यशायाह 44:8)।

इस बात के प्रमाण के लिए कि कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है, यशायाह 45:5, 6, 14, 21-22, और यशायाह 46:9 भी देखें।

“आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है” (भजन संहिता 19:1)।

“जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूँ; तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?” (भजन संहिता 8:3-4)। परमेश्वर केवल इस पृथ्वी के परमेश्वर नहीं है, बल्कि वह सम्पूर्ण सृष्टि के परमेश्वर और सृष्टिकर्ता हैं।

(3) परमपिता परमेश्वर मनुष्य नहीं है।

यह क्यों मायने रखता है

कुछ विश्वासों में यह कहा जाता है कि परमेश्वर मनुष्य हैं, इसका कारण यह है कि मनुष्य को परमेश्वर के तुल्य माना जाए। इससे परमेश्वर की महिमा कम हो जाती है। ऊपर "केवल एक परमेश्वर हैं" के अंतर्गत परमेश्वर की जलन के बारे में पद देखें।

वचन आधारित प्रमाण

"ईश्वर मनुष्य नहीं कि झूठ बोले, और न वह आदमी है कि अपनी इच्छा बदले" (गिनती 23:19)।

"मैं मनुष्य नहीं परमेश्वर हूँ" (होशे 11:9)।

"वे अपने आप को बुद्धिमान जताकर मूर्ख बन गए, और अविनाशी परमेश्वर की महिमा को नाशवान् मनुष्य" (रोमियों 1:22-23)। परमेश्वर को मनुष्य के स्वरुप के समान बनाना मूर्तिपूजा है।

"यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है" (मत्ती 16:17)। यीशु के कथन के अनुसार पिता माँस और लहू नहीं हैं।

"परमेश्वर आत्मा है" (यूहन्ना 4:24)।

(4) परमेश्वर कभी नहीं बदले।

यह क्यों मायने रखता है

झूठे विश्वासों के पास यह कहने के लिए अलग-अलग कारण हैं कि परमेश्वर बदल सकते हैं। वे शायद यह कहना चाहें कि वह हमारे समान ही एक मनुष्य थे, जो मनुष्य को परमेश्वर के स्तर तक ले जाता है। वे शायद यह कहना चाहें कि परमेश्वर में भलाई और बुराई दोनों हैं, या यह कि परमेश्वर गलतियाँ कर सकते हैं।

वचन आधारित प्रमाण

"क्योंकि मैं यहोवा बदलता नहीं" (मलाकी 3:6)।

"अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही परमेश्वर है" (भजन संहिता 90:2)।

"ज्योतियों के पिता... न अदल बदल के कारण उस पर छाया पड़ती है" (याकूब 1:17)।

(5) यीशु परमेश्वर हैं।

यह क्यों मायने रखता है

1. क्योंकि यीशु परमेश्वर हैं, इसलिए उनकी बलिदानपूर्वक मृत्यु का मूल्य अनंत है - जो संसार के पापों की क्षमा के लिए पर्याप्त है।
2. क्योंकि वह परमेश्वर हैं, उनमें हमें बचाने की सामर्थ्य है; वह मार्ग, सत्य और जीवन हैं।
3. क्योंकि वह परमेश्वर हैं, हमें उनकी उपासना वैसे ही करनी चाहिए जैसे हम पिता की उपासना करते हैं।

यदि कोई कहता है कि यीशु को परमेश्वर ने बनाया था या वह परमेश्वर नहीं बल्कि एक मनुष्य थे, तो वे परमेश्वर की उस महिमा को ले लेते हैं जिसके वह योग्य हैं। वे उद्धार के लिए यीशु पर पूरी तरह से विश्वास करने के बजाय एक अलग सुसमाचार पर भी विश्वास करते हैं।

वचन आधारित प्रमाण

“मैं और पिता एक हैं” (यूहन्ना 10:30)।

“कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ” (यूहन्ना 8:58)।

“पिता किसी का न्याय नहीं करता, परन्तु न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है, कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करें” (यूहन्ना 5:22-23)।

सारी वस्तुएँ यीशु के द्वारा और उन्हीं के लिये सृजी गई हैं। (कुलुस्सियों 1:16)।

यीशु परमेश्वर के पूर्ण स्वरुप हैं और अपने सामर्थ्य से सृष्टि को बनाए रखते हैं (इब्रानियों 1:3)।

यीशु “आदि और अन्त” हैं, एक ऐसी उपाधि जिसका दावा परमेश्वर स्वयं करते हैं (प्रकाशितवाक्य 1:17, यशायाह 44:6)।

अन्य संदर्भ जहाँ यीशु को परमेश्वर कहा गया है : यूहन्ना 1:1, 14, प्रेरितों के काम 20:28, तीतुस 2:13, यशायाह 9:6, 1 तीमुथियुस 3:16, और यूहन्ना 14:9

वे पद जो दर्शाते हैं कि यीशु में परमेश्वर के गुण हैं : मत्ती 18:20, मत्ती 28:20, फिलिप्पियों 3:21, इब्रानियों 13:8, यूहन्ना 2:24-25, और मीका 5:2

वे पद जो दर्शाते हैं कि यीशु की उपासना वैसे ही की जाती है जैसे पिता की उपासना की जाती है : इब्रानियों 1:6, 1 कुरिन्थियों 1:2, फिलिप्पियों 2:9-11, यशायाह 45:22-23, प्रकाशितवाक्य 1:6, प्रकाशितवाक्य 5:12-13, और यूहन्ना 17:5 (यशायाह 42:8, यशायाह 48:11 देखें)।

(6) यीशु शारीरिक देह के साथ मृतकों में से जी उठे।

यह क्यों मायने रखता है

कलीसिया के शुरुआती दिनों से ही पुनरुत्थान सुसमाचार का एक ज़रूरी हिस्सा था। प्रेरितों ने प्रचार किया कि यीशु परमेश्वर के पुत्र और सृष्टि के उद्धारकर्ता हैं। उनका पुनरुत्थान साबित करता है कि उनका सुसमाचार हमें बचाकर अनंत जीवन दे सकता है।

वचन आधारित प्रमाण

यीशु ने अपने शारीरिक पुनरुत्थान की भविष्यद्वाणी की थी : “इस मन्दिर को ढा दो, और मैं इसे तीन दिन में खड़ा कर दूँगा... परन्तु उसने अपनी देह के मन्दिर के विषय में कहा था” (यूहन्ना 2:19-21)।

यीशु ने अपने पुनरुत्थान के बाद अपने चेलों से कहा: “मेरे हाथ और मेरे पाँव को देखो कि मैं वही हूँ। मुझे छूकर देखो, क्योंकि आत्मा के हड्डी माँस नहीं होता जैसा मुझ में देखते हो” (लूका 24:39)।

यीशु ने थोमा से कहा, “अपनी उँगली यहाँ लाकर मेरे हाथों को देख और अपना हाथ लाकर मेरे पंजर में डाल, और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो” (यूहन्ना 20:27)।

1 कुरिन्थियों 15:20-23 हमें बताता है कि यीशु को उसी तरह से जी उठाया गया था जिस तरह से मसीहियों को जी उठाया जाएगा। पूरा अध्याय मसीही विश्वास के लिए मसीह के शारीरिक पुनरुत्थान की आवश्यकता को दर्शाता है। यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमें जी उठने की कोई आशा नहीं है, और इसलिए हमारा सुसमाचार व्यर्थ है (15:17)। यदि मसीह नहीं जी उठा, तो हमें भी जी उठाया नहीं जाएगा, और हम एक अनंत आशा के बिना अभागे हैं (15:19)।

प्रेरितों ने पुनरुत्थान को सुसमाचार के एक अनिवार्य भाग के रूप में प्रचारित किया (प्रेरितों के काम 2:31-32, प्रेरितों के काम 3:15, प्रेरितों के काम 4:10, प्रेरितों के काम 10:40-41, प्रेरितों के काम 13:30-37, प्रेरितों के काम 17:31, और प्रेरितों के काम 26:8,23

(7) पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

यह क्यों मायने रखता है

जो विश्वास पवित्र आत्मा के ईश्वरत्व को नकारता है, वह आमतौर पर त्रिएक और मसीह के ईश्वरत्व को नकारता है। जो व्यक्ति यह नहीं मानता कि पवित्र आत्मा परमेश्वर है, वह उनकी उपासना नहीं करेगा और उन्हें वह आदर नहीं देगा जिसके वह योग्य हैं।

वचन आधारित प्रमाण

पवित्र आत्मा को परमेश्वर कहा जाता है (प्रेरितों के काम 5:4 और 2 कुरिन्थियों 3:17)।

पवित्र आत्मा के पास वह ज्ञान है जो केवल परमेश्वर के पास है: वह परमेश्वर को पूरी तरह से समझता है (1 कुरिन्थियों 2:10-11) और उसने प्राचीन समय में भविष्यद्वाणी की थी (1 पतरस 1:10-11, 2 पतरस 1:21)।

पवित्र आत्मा हर जगह उपस्थित है (भजन संहिता 139:7)।

पवित्र आत्मा को मसीह की आत्मा कहा जाता है और वह हर विश्वासी के साथ उपस्थित है (रोमियों 8:9)।

पवित्र आत्मा वह करता है जो केवल परमेश्वर ही कर सकते हैं (लूका 24:49, यूहन्ना 16:8-11, इफिसियों 3:16, गलातियों 5:22-23)।

पवित्र आत्मा की निन्दा की जा सकती है (लूका 12:10)।

(8) परमेश्वर त्रियक्ता है।

यह क्यों मायने रखता है

जो लोग त्रिएकता को नकारते हैं, वे आमतौर पर इस बात से इनकार करते हैं कि यीशु और पवित्र आत्मा परमेश्वर हैं, और उनकी उपासना नहीं करते। सबसे बड़ी ग़लती जो एक व्यक्ति कर सकता है, वह है या तो किसी ऐसे व्यक्ति की उपासना करना जो परमेश्वर नहीं है, या किसी ऐसे व्यक्ति की उपासना करने में विफल होना जो परमेश्वर है। एक विश्वास जो इस बात से इनकार करता है कि यीशु परमेश्वर हैं, एक नया सुसमाचार विकसित करेगा।

वचन आधारित प्रमाण

त्रिएकता का सिद्धांत तीन तथ्यों से आता है।

1. बाइबल कहती है कि केवल एक ही परमेश्वर हैं।
2. बाइबल पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा को परमेश्वर के रूप में बताती है।
3. पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक दूसरे से अलग हैं और व्यक्तियों के रूप में एक दूसरे के साथ बातचीत करते हैं।

पहले दो तथ्यों के वचन आधारित प्रमाण के लिए, इस पुस्तिका में “केवल एक ही परमेश्वर हैं,” “यीशु परमेश्वर हैं,” और “पवित्र आत्मा परमेश्वर है” शीर्षक वाले अनुभाग देखें।

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक दूसरे और विश्वासियों के साथ व्यक्तियों के रूप में बातचीत करते हैं, इसके प्रमाण के लिए यूहन्ना 14-16 देखें। यूहन्ना 14 में, 10-13, 16, 21, 23, 24, 26, 28 और 31 पद देखें। यूहन्ना 15 में, 1-2, 9, 10, 15, 23-24 और 26 देखें। यूहन्ना 16 में, 7, 10, 13-16, 26-28 और 32 पद देखें।

(9) उद्धार केवल मसीह के प्रायश्चित से ही है।

यह क्यों मायने रखता है

झूठे विश्वास एक व्यक्ति को परमेश्वर का अनुग्रह पाने के लिए ग़लत दिशा-निर्देश देते हैं। उद्धार पाने का केवल एक ही मार्ग है।

वचन आधारित प्रमाण

“क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें” (प्रेरितों 4:12)।

“उसके पुत्र यीशु का लहू हमें सब पापों से शुद्ध करता है” (1 यूहन्ना 1:7)।

“क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन् परमेश्वर का दान है” (इफिसियों 2:8)।

“अत: जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें” (रोमियों 5:1)।

“सब विश्वास करनेवालों...उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंतमेंत धर्मी ठहराए जाते हैं” (रोमियों 3:22, 24)।

“अत: जब कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे?” (रोमियों 5:9)।

“परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है” (रोमियों 6:23)।

(10) केवल परमेश्वर की ही उपासना करनी चाहिए।

यह क्यों मायने रखता है

यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के अलावा किसी और की उपासना करता है, तो वह परमेश्वर का शत्रु है और शैतान के अधीन है। परमेश्वर के साथ किसी और की उपासना करना संभव नहीं है। मानवीय अगुवों, संतों या मरियम की उपासना करना ग़लत है। आत्माओं से प्रार्थना करना और उनकी आज्ञा मानना ग़लत है।

वचन आधारित प्रमाण

परमेश्वर ने अपने लोगों से कहा कि वे किसी भी मूर्ति को दण्डवत न करें (निर्गमन 20:4-5)। इसलिए हम जानते हैं कि किसी भी वस्तु की उपासना करना ग़लत है।

शैतान ने यीशु को अपने सामने झुकने के लिए लुभाया, लेकिन यीशु ने कहा कि लिखा है कि हमें केवल परमेश्वर को प्रणाम और उनकी ही उपासना करनी चाहिए (मत्ती 4:10)। इसलिए हम जानते हैं कि शैतान की उपासना करना ग़लत है।

प्रेरित पौलुस ने कहा कि दुष्ट की उपासना करने से परमेश्वर का क्रोध और जलन भड़कता है (1 कुरिन्थियों 10:20-22)। इसलिए हम जानते हैं कि उन आत्माओं की उपासना करना ग़लत है जो परमेश्वर के विरुद्ध हैं।

प्रेरित पौलुस ने कहा कि जो लोग स्वर्गदूतों की उपासना करते हैं वे धोखा खाते हैं (कुलुस्सियों 2:18)। इसलिए हम जानते हैं कि स्वर्गदूतों की उपासना करना ग़लत है।

प्रेरित पतरस ने कुरनेलियुस से कहा कि वह उसकी उपासना न करे क्योंकि वह भी एक मनुष्य था (प्रेरितों के काम 10:25-26)। इसलिए हम जानते हैं कि किसी मनुष्य की उपासना करना ग़लत है।

(11) हम विश्वास के द्वारा उद्धार पाते हैं।

यह क्यों मायने रखता है

क्योंकि उद्धार पूरी तरह से मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के द्वारा प्रदान किया जाता है, इसलिए लोग अपने उद्धार को पाने के लिए कुछ भी नहीं कर सकते, यहाँ तक कि आंशिक रूप से भी नहीं। कोई भी मानव संगठन अन्य आवश्यकताओं को निर्धारित करके किसी व्यक्ति से उद्धार को दूर नहीं रख सकता है।

वचन आधारित प्रमाण

“क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा” (रोमियों 3:20)।

“**मनुष्य व्यवस्था के कामों से अलग ही, विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरता है**” (रोमियों 3:28)।

“इसी कारण प्रतिज्ञा विश्वास पर आधारित है कि अनुग्रह की रीति पर हो” (रोमियों 4:16)।

“अत: जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें” (रोमियों 5:1)।

“और जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा” (प्रेरितों के काम 2:21)।

“क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है...वरन् परमेश्वर का दान है, और न कर्मों के कारण” (इफिसियों 2:8-9)।

“यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है” (1 यूहन्ना 1:9)।

“सुसमाचार को छोड़ जिसे तुम ने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो शापित हो” (गलातियों 1:9)।

(12) हमें उद्धार का व्यक्तिगत आश्वासन मिल सकता है।

यह क्यों मायने रखता है

क्योंकि उद्धार परमेश्वर का मुफ़्त उपहार है, जिसे विश्वास से प्राप्त किया जाता है, एक व्यक्ति जान सकता है कि वह बचा हुआ है। यदि कोई व्यक्ति परमेश्वर के सामने अपने पापों का अंगीकार करता है, और मसीह के प्रायश्चित के बलिदान के आधार पर क्षमा करने के परमेश्वर के वायदे पर विश्वास करता है, तो वह व्यक्ति विश्वास कर सकता है कि वह बचा हुआ है। परमेश्वर अपनी आत्मा की गवाही भी देते हैं कि हम बचाए गए हैं। झूठे विश्वास आम तौर पर लोगों को डर में रखते हैं।

वचन आधारित प्रमाण

“मैं ने तुम्हें, जो परमेश्वर के पुत्र के नाम पर विश्वास करते हो, इसलिये लिखा है कि तुम जानो कि अनन्त जीवन तुम्हारा है” (1 यूहन्ना 5:13)।

“इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ कि हमें न्याय के दिन हियाव हो” (1 यूहन्ना 4:17)।

“परन्तु लेपालकपन की आत्मा मिली है, जिससे हम हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारते हैं। आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं” (रोमियों 8:15-16)।

(13) बचाए न गए लोग अनन्त दण्ड भोगेंगे।

यह क्यों मायने रखता है

यदि कोई विश्वास अनंत दंड की वास्तविकता को नकारता है, तो यह मानवीय विकल्पों के महत्व और परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति आदर को कम करता है। यीशु ने कई बार नरक के बारे में बात की, जिससे इस सिद्धांत का महत्व पता चलता है।

वचन आधारित प्रमाण

यीशु ने एक धनी व्यक्ति के बारे में बताया जो मृत्यु के बाद नरक की आग में था (लूका 16:24)।

“उनकी पीड़ा का धुआँ युगानुयुग उठता रहेगा, और जो उस पशु और उसकी मूर्ति की पूजा करते हैं...उनको रात दिन चैन न मिलेगा” (प्रकाशितवाक्य 14:11)।

“आग के अनन्त दण्ड में पड़कर दृष्टान्त ठहरे हैं” (यहूदा 7)।

“हे शापित लोगो, मेरे सामने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है” (मत्ती 25:41)।

“और ये अनन्त दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे” (मत्ती 25:46)।